डॉ रूचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर,हिंदी विभाग
शिवाजीकालेज,दिल्लीविश्वविद्यालय

दिव्या उपन्यास के नारी पात्र / दिव्या का चरित्र चित्रण

जैनेंद्र का मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास ' दिव्या ' उनके प्रगतिशील विचारों को अभिव्यक्त करता है। उपन्यास की नायिका दिव्या कथा के प्रारंभ से लेकर कथान्त तक विद्यमान रहती है। सभी घटनाएं प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उससे संबंधित हैं और उसके चरित्र को विकसित करती हैं। वह नारी को उसके अस्तित्व की पहचान दिलाने वाली अद्भुत स्त्री है। रामविलास शर्मा का अभिमत है -" यशपाल का सबसे प्रभावशाली उपन्यास दिव्या है । दिव्या उपन्यास की मुख्य कथा एवं प्रासंगिक कथाओं में अद्भुत सामंजस्य दिखाई पड़ता है ।कथा के आकस्मिक एवं अप्रत्याशित मोड़ कथानक को शिथिल नहीं होने देते। यशपाल जी ने दिव्या को आदि से अंत तक ऐतिहासिक पात्र के रूप में चित्रित किया है। दिव्या वास्तव में नारी की स्वातंत्र्य कामना एवं अपने अस्तित्व की खोज का सूचक है । दिव्या के माध्यम से नारी मुक्ति संबंधी जो प्रश्न यशपाल द्वारा उठाए गए हैं उनकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही बनी है। जितनी कि उस अतीत कालीन बौद्ध समाज मे थी , जैसे कि जिस समाज में कुलवधु की अपेक्षा एक वैश्या अधिक स्वतंत्र एवं सुख सुविधा संपन्न है क्या उस समाज के जीवन मूल्यों का विश्लेषण आवश्यक नहीं है।"(1.)(हिंदी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव, डॉ भारत भूषण अग्रवाल, पृष्ठ 111)
लेखक उपन्यास में हमें उसके कई रूपों से परिचित कराते हैं। माता-पिता के ममत्व पूर्ण संरक्षण से वंचित व प्रपितामह धर्मस्थ देवशर्मा के आश्रय में पली दिव्या लज्जा शीला , कलावंत , कुल कन्या के रूप में अंकित है । भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनुसार प्रपितामहगृह में रहते हुए ना केवल वह विभिन्न कलाओं में पारंगत होती है , इसके साथ ही वह भारतीय नारी की लज्जाशीलता को भी प्राप्त करती हैं। उसका जन्म द्विजकुल में हुआ था अतः कुलानुसार उसमें तर्क -वितर्क करने की अद्भुत शक्ति भी दिखाई देती है।

उपन्यास में पाठकों का उसका प्रथम परिचय बसन्तोत्सव में राजनर्तकी मल्लिका की

शिष्या के रूप में नृत्य प्रदर्शन के दौरान होता है जहां उसके उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण उसे 'सरस्वती पुत्री ' सम्मान से सम्मानित किया जाता है। उसके प्रदर्शन के उपरांत शस्त्र प्रतियोगिता होती है जिसमें पृथुसेन विजयी घोषित होता है। परम्परानुसार दिव्या उसे पुष्प मुकुट पहनाकर सम्मानित करती है। प्रथानुसार जब वह दिव्या की शिविका को कंधा देने प्रस्तुत होता है तब अभिजात्य वर्ग (पृथुसेन के दासपुत्र होने से) इसका विरोध करते हैं । निश्छल पिता और प्रपितामह की रक्षा में पली-बढ़ी युवती दिव्या किसी भी प्रकार के वर्ग भेद, जाति भेद , व्यक्तिगत भेद से ऊपर है। वह मनुष्य का आंकलन उसके गुणों से करती है। अतः वह पृथुसेन का पक्ष लेते हुए अभिजात्य वर्ग का तीव्र विरोध करती है।

राजनर्तकी मल्लिका के महल में दिव्या की भेंट पृथुसेन से होती है जहां वह उसके प्रति आकृष्ट हो प्रेमनिवेदन करता है। वह पृथुसेन का निवेदन स्वीकार कर भविष्य में उससे विवाह के स्वप्न देखने लगती है। । यहां दिव्या का विशुद्ध प्रेमिका रुप उभर कर सामने आया है जब वह अपने प्रेमपात्र पर सहज विश्वास कर अपना सर्वस्व अर्पण कर देती है। उनके मध्य के रागात्मक संबंध के कारण वह गर्भवती हो जाती है। अचानक सांगल पर शत्रु आक्रमण कर देते हैं । पृथुसेन युद्ध में जाने से पूर्व दिव्या को लौटकर विवाह करने का वचन देता है। दिव्या प्रेमी की मंगलकामना व विजय के लिए तांत्रिक से ताबीज बनाकर देती है। युद्ध में विजयी पृथुसेन रत्न , अश्व, हाथी एवं दास दासियों के साथ लौटता है। अपने उज्जवल भविष्य के लिए वह दिव्या को भूल , पिता की आज्ञा मान यवन पुत्री सीरो से विवाह कर लेता है । पृथुसेन के विश्वस्त आश्रय के अभाव में संत्रस्त , पीड़ित युवती दिव्या दर दर की ठोकरें खाने को विवश हो जाती है। वह वापस अपमानित, कलंकित हो प्रपितामहगृह में जाना अस्वीकार कर देती है।

समयानुसार वह पुत्र को जन्म देती है। एक व्यापारी के हाथों बिकती है जहां उसे ' दारा ' नाम मिलता है। व्यापारी उसे पुरोहित चक्रधर को (पत्नी के विषज्वर से पीड़ित होने से अपने नवजात शिशु को दुग्धपान कराने के लिए) पचास स्वर्ण मुद्राओं में बेच देता है। यहां उसका आश्रयहीन मां का रूप सामने आता है जो ममत्व के लिए दूसरे के बच्चे को दुग्धपान कराने के लिए भी तैयार हो जाती है। इतना ही नहीं वह वेश्या का मार्ग अपनाने के लिए भी तैयार हो जाती है किंतु बच्चे के साथ कोई उसे स्वीकार नहीं करता। निराश, हताश वह बच्चे के साथ यमुना नदी में कूदकर आत्महत्या करने का प्रयत्न करती है।

राजनर्तकी रत्नप्रभा के सेवक उसे बचा लेते हैं। आत्मसम्मान की चाह में दिव्या रत्नप्रभा के आश्रय में मथुरा की सर्वश्रेष्ठ नर्तकी 'अशुमाला ' के रूप में रसिक गणों के मध्य लोकप्रिय हुई। यहां तक की कथा उसके व्यक्ति (दिव्या)से वर्ग (दासी) और वर्ग से नर्तकी बनने की है। वेश्यत्व से असंतुष्ट दिव्या ने कभी भी अपने व्यक्तित्व पर आंच नहीं आने दी।

उत्तराधिकारी के चयन के लिए राज नर्तकी मल्लिका जब अपनी शिष्या रत्नप्रभा के यहां आती है तो वहां अंशुमाला के रूप में दिव्या को देखकर प्रसन्न होती है। वह उसे सांगल लाकर अपने उत्तराधिकारी के रूप में राजनर्तकी घोषित करती है। एक द्विजकन्या का राजनर्तकी बन जन के लिए उपस्थित रहना अभिजात्य वर्ग के विरोध का कारण बनता है। निराश अंशुमाला नगर द्वार पर बनी पांथशाला में आ जाती है। यहां उसे रुद्रधीर के षड़यंत्र से बचा बौद्ध भिक्षु पृथुसेन मिलता है और उसे संघ में सम्मिलित होने के लिए कहता है किंतु दिव्या संघ में नारी की स्थिति से अवगत होने के उपरांत विनम्रतापूर्वक उसे मना कर देती है। वह पृथुसेन को यह भी बताती है कि नारी का धर्म निर्वाण न हो कर सृष्टि है। मूर्ति कार मारिश उससे प्रेमनिवेदन कर सहज स्त्री पुरुष संबंधों की याचना करता है जिसे वह सहर्ष स्वीकार कर लेती है। उसके मतानुसार संतति के सत्य को स्वीकार करना ही वस्तुत: अमरत्व को खोजना है। कह सकते हैं कि दिव्या का चरित्र पंक में खिले कमल सदृश है जो समाज के कीचड़ में रहकर भी अपने स्वाभिमान की रक्षा करता है।

अन्य पात्रों में छाया, वाया , धाताशति आदि हैं जो वर्गगत पात्र हैं। इनका स्वयं का कोई व्यक्तित्व नहीं है तथा ये अपने वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। मल्लिका व रत्न प्रभा वेश्या वर्ग की राजनर्तकियां हैं। छाया, वापा , धाताशति दासी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। सीरो पाश्चात्य नारी वर्ग (यवन वर्ग) की प्रतिनिधि है अतः आधुनिक शब्दावली का प्रयोग करती है।

'दिव्या' के पात्रों की विशेषता—

- **दिव्या का चरित्र और जीवन की घटनाएँ ही कथानक का केन्द्र हैं ।**
- उपन्यास के प्रत्येक परिच्छेद में दिव्या की महत्वपूर्ण स्थिति ।
- काल्पनिक होकर भी काल्पनिक नहीं लगते।

- दिव्या उस समाज की गाथा जब नारी भोग्य मात्र थी उस का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।

1. दिव्या में नारी के विविध रूप दिखायी देते हैं , असहाय , दयनीय , एकनिष्ठ पत्नी , दासी ,स्वामी के अत्याचार को सहती, स्वावलम्बी । दिव्या की चारित्रिक विशेषताएँ पाठकों की सहानुभूति जाग्रत करती है।
2. दिव्या = नायिका- उसमें अत्याधिक साहस है -विपरीत परिस्थितियों में घबराती नहीं ।
3. वह उत्कृष्ट, कलामयी, सरल हृदयी, वात्सल्मयी, दृढ़ निश्चयी एवं निष्कलुष है ।